Seventeenth Loksabha

span>

Title: Need to include 'Margashirsha Shukla Ekadasi' as 'Antarashtriya Geeta Diwas.

श्रीमती केशरी देवी पटेल (फूलपुर): सभापति महोदय, हमारा देश भारत एक धर्म परायण देश है। इस देश की धरती पर लगभग 5200 वर्ष पूर्व अवतरित श्रीमद् भगवद्गीता 700 श्लोकों का एक दिव्य ग्रन्थ है। यह एक अमूल्य चिन्तामणि रत्न, साहित्य सागर में अमृत कुम्भ और विचारों के उद्यान में कल्पतरू तथा धर्म में सत्य पथ का एक ज्योति स्तम्भ है। इसमें वेद का मर्म, उपनिषद का सार, महाभारत जैसा ऐतिहासिक ग्रन्थ का नवनीत तथा सांख्य का समन्वय है। यह एक ऐसा आध्यात्मिक शास्त्र है जिसमें मनुष्य नर से नारायण बन सकता है। यह अलौकिक ग्रन्थ एक ऐसा तत्वज्ञान है जिसमें भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व की आत्मा बसती है और आज तक निर्विवादित रहा है। लगभग सभी सम्प्रदायों के संस्थापक महापुरुषों ने अपनी क्षेत्रीय भाषा में गीता का ही सत्य दुहराया है कि "ईश्वर एक है"। पूरे विश्व में समस्या बनी है। रक्तरंजित वातावरण, आतंकवाद, नस्लभेद, ऊंच-नीच तथा अनेकानेक मुद्दों से विश्व के हर राष्ट्र का नेतृत्व समाधान खोजने के लिए प्रयास कर रहा है लेकिन इन सबका सम्पूर्ण समाधान केवल श्रीमद् भगवद्गीता भाष्य यथार्थ गीता में ही भली प्रकार है। माननीय सभापति महोदय, इस संदर्भ में मेरी एक प्रार्थना तथा बहुमूल्य सुझाव है। हमारे पंचांग के अनुसार "गीता जयंती दिवस" मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी पर मनायी जाती है। हमारी मान्यता के अनुसार यह दिवस श्रीमद् भगवद्गीता का प्रतीकात्मक जन्म दिवस है। इसी दिन महाभारत युद्ध से पहले अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था। अत: विश्व में इस महान ग्रन्थ को यथोचित सम्मानित करने के लिए इस दिवस को "अंतर्राष्ट्रीय दिवस" घोषित कराने का प्रयास किया जाए ताकि विश्व जनमानस का ध्यान इसके उपदेशों पर केन्द्रित हो सके।... (व्यवधान)

माननीय सभापति : श्री देवजी पटेल जी।

… (व्यवधान)

माननीय सभापति : इसमे एसोशिएट नहीं। नियम 377 में एसोशिएट कहां होता है?

… (व्यवधान)

श्री देवजी पटेल (जालौर): सभापति महोदय, इन्होंने दिल से एसोशिएट कर दिया।

माननीय सभापति : जी।